अप्रैल २०१४

क़ीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

अक्रम एक्सप्रेस

औरों के लिए कर गुज़रना

३ दादाजी कहते हैं...

४ यह तो नई ही बात!

अनुक्रमणिका

६ पुण्यशाली कौन?

९ सर्कस

१२ चलो खेलें

१४ ऐतिहासिक गौरवगाथा

१७ अपने आपको परखकर देखो!

१८ मीठी यादें

१९ GNC Day की झलक

संपादकीय

बालमित्रों,

आपने अपने दादा-दादी या नाना-नानी को देखा ही होगा। वे हमेशा अड़ोस-पड़ोस में, सगे-संबंधियों में या फिर किसी और को भी ज़रूरत के समय मदद करते ही हैं। मदद करते समय वे कभी भी अपना-पराया नहीं देखते। क्या हम भी ऐसा कर सकते हैं? सोचिए तो सही।

औरों के लिए कर गुज़रने की भावनावाले लोग कैसे होते हैं? उसके लिए जो ज़रूरी है, वह नोबिलिटी कैसे आएगी, इस तरह का जीवन जीने से हमें क्या फायदा होगा, है आदि की सुंदर समझ परम पूज्य दादाश्री ने दी है, जो सरल उदाहरण के साथ इस अंक में दी गई है। तो आओ, इस बहुत ही मज़ेदार अंक को पढ़ें और हम भी अपने जीवन में औरों की मदद कर सकें, इस तरह जीवन बिताएँ।

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक: १
अखंड क्रमांक: १३
अप्रैल २०१४

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपयें
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपयें
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

- डिम्पल महेता

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मनुष्य जीवन की विशेषता क्या है ?

दादाश्री : मनुष्य जीवन परोपकार के लिए है। परोपकार मतलब मन का उपयोग भी औरों के लिए करना, वाणी का उपयोग भी औरों के लिए करना और वर्तन का उपयोग भी औरों के लिए करना। जो औरों के लिए कर गुज़रता है, उसके घर क्या रहेगा?

प्रश्नकर्ता : लाभ तो होगा ही न।

दादाश्री : लोग अपने खुद के सुख में ही मग्न हैं। दूसरों के सुख में मेरा सुख है, ऐसी सभी बातें छूटती ही जा रही हैं। "दूसरों के सुख में मैं सुखी हूँ" ऐसा सब अपने यहाँ खत्म हो गया है और अपने ही सुख में मग्न हैं कि मुझे तो चाय मिल गई, बस!

भगवान कहते हैं कि "मन-वचन-काया का उपयोग औरों के लिए करो, फिर तुम्हें कुछ भी दुःख आए तो मुझ से कहना" औरों को कुछ भी देना शुरू किया तभी से आनंद शुरू हो जाता है। लेकिन लोग तो यही समझते हैं कि "यदि मैं दे दूँगा तो मेरा चला जाएगा।"

दैवीय गुण किसे कहेंगे? "तेरा वह तेरा, लेकिन जो मेरा है, वह भी तेरा।" जो परोपकारी होते हैं, वे अपना भी औरों को दे देते हैं। तुम दस बार उसका नुकसान करो फिर भी तुम्हें जब काम पड़े तब वह तुम्हारी हेल्प करें। तुम फिर से उसका नुकसान करो, फिर भी तुम्हें काम पड़े तो उस घड़ी वह तुम्हारी हेल्प करे। उसका स्वभाव ही हेल्प करने का है। इसलिए हम समझ जाते हैं कि यह "सुपरह्यूमन" है।

अगर अभी तुम किसी के दिल को ठंडक दोगे तो उसका फल तो आएगा ही। उसकी शत प्रतिशत गारन्टी लिखकर देता हूँ। "सुख की दुकान" खोलना, यही मेरा व्यापार है। ये भाई मुझे मिलें और यदि उन्हें लाभ न हो फिर किस काम का? जगत् का काम करोगे तब तुम्हारा काम तो यों ही चलता रहेगा और तब तुम्हें आश्चर्य होगा!

धर्म की शुरूआत ही ओव्लाइज़िंग नेचर से होती है। ओव्लाइज़िंग नेचर यानी औरों के लिए कुछ भी कर गुज़रने का स्वभाव।

यह

हमारे बर्ताव से किसी का दुःख कम हो या न भी हो, लेकिन भाव तो ऐसा ही रहना चाहिए कि मेरे पास यदि पैसा है तो मुझे किसी के दुःख को कम करना चाहिए। अकल हो तो मेरी अकल से किसी को समझाकर उसका दुःख कम करना है। अपने पास जो कुछ भी हो उससे हेल्प करनी है।

दो

नई

यह लाइफ यदि परोपकार में बीतेगी तो तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा, तुम्हें किसी भी तरह की अड़चन नहीं आएगी। तुम्हारी जो भी इच्छाएँ हैं, वे सभी पूरी होगी।

इस जगत् का कुदरती नियम क्या है कि तुम्हारे खुद के फल औरों को दे दोगे तो कुदरत तुम्हारा चला लेगी।

बात!

आम का पेड़ अपने आम कितने खा लेता होगा? उसके फल, लकड़ी, पत्ते सबकुछ औरों के लिए ही उपयोग में आते हैं न! जिसके परिणाम स्वरूप वह उच्च गति पाता है।

ही

परोपकार करनेवाले सामनेवाले की समझ को नहीं देखते। क्या आम का पेड़ देखता है कि उसके फल खानेवाला खराब है या अच्छा है? इस तरह का जीवन जीने से धीरे-धीरे जीवों की ऊर्ध्वगति होती हैं।

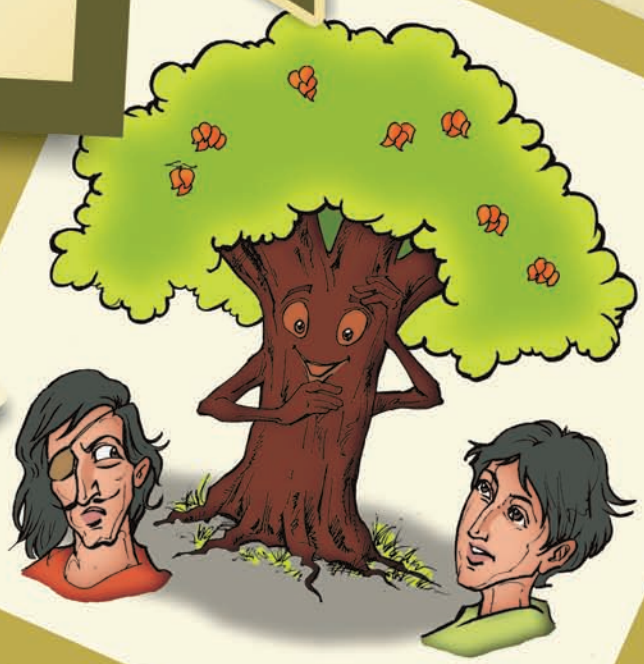

पुण्यशाली कौन?

"जय। दादी को यह खाने की थाली दे आओ तो बेटा" मम्मी ने रसोई में से आवाज़ लगाई।

"लेकिन मेरे दोस्त मेरा इंतज़ार कर रहे हैं, मम्मी। नीलम या रैना दीदी से कह दो न।" जय खीजकर बोला।

"इतना छोटा सा काम करने में भी तुझे तकलीफ हो रही है?" मम्मी की आवाज़ कुछ कड़ी हो गई।

"ठीक है, दे आता हूँ। गुस्सा मत करो। सचमुच, दादी कितनी लकी है कि सारा दिन लोग उनकी सेवा में मौजूद ही रहते हैं" जय व्यंग्य में बोला।

जय को थाली देते हुए मम्मी बोली, "बेटा, लकी तो हम हैं कि हम उनके लिए कुछ कर सकते हैं। जिन्हें औरों के लिए कुछ कर गुज़रने का मौका मिलता है, वह लोग पुण्यशाली कहलाते हैं।"

जय मम्मी की बात से सहमत नहीं था लेकिन उसने कोई बहस नहीं की। छः महीने से दादी उनके घर पर रह रही थीं। वैसे तो वे उसकी सगी दादी नहीं थी, पड़ोस में रहती थी। लेकिन वे अकेली रहती थीं इसलिए जय के मम्मी-पापा उनकी देखभाल करते थे। पर जब से दादी की तबियत खराब रहने लगी तब से जय के मम्मी-पापा ने आग्रह करके उन्हें अपने घर में ही रहने के लिए बुला लिया। और तब से जय को भी दादी का थोड़ा बहुत काम करना पड़ता था। जो उसे हमेशा खटकता रहता था। मौका मिलते ही वह हमेशा काम से बचने की कोशिश करता था।

दादी को फटाफट थाली देकर वह अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने के लिए दौड़ा। गेम अच्छी चल रही थी। अचानक एक कैच पकड़ने के लिए जय कूदा और धम्म से जमीन पर गिर गया। कैच तो पकड़ लिया लेकिन पैर में ज़ोरदार मोच आ गई। डॉक्टर ने पट्टी बाँध दी और एक हफ्ते के लिए पलंग पर पैर ऊँचा रखकर सोते रहने के लिए कहा।

पैर में पट्टी बंधी होने के कारण जय खुश नहीं था। लेकिन पूरे हफ्ते तक उसे किसी के लिए कुछ भी काम नहीं करना पड़ेगा बल्कि घर के लोग उसका काम करेंगे, ऐसा सोचकर उसे बहुत मज़ा आ रहा था।

थोड़ी देर बाद मम्मी उसके कमरे में आई, "बेटा, कुछ लेकर आऊँ तुम्हारे लिए?"

"हमम... कॉल्ड कॉफी विद आइस्क्रीम" जय ने थोड़ा सोचकर अपनी फरमाईश पेश की। थोड़ी देर बाद जय को अपनी फेवरिट

कोमिक बुक पढ़ने का मन हुआ। उसने मम्मी को ज़ोर से आवाज़ लगाई, "मम्मी!!"

नीलम दौड़ती हुई उसके रूम में आई, "क्या हुआ जय?"

"टेबल पर से मुझे कोमिक बुक दो।" जय ने ऑर्डर किया।

दो-तीन दिन तक जय ने उसे मिलनेवाली राजाशाही ट्रीटमेन्ट का मज़ा लिया। लेकिन आखिर में वह उससे ऊब गया। सभी बातों के लिए मदद लेना, उसे परवशता लगने लगी।

और एक दिन नीलम और दीदी की बातचीत उसके कान में पड़ते ही जय की आँखों से टप-टप आँसूँ गिरने लगे। दीदी और नीलम को जय का काम करने में बोरियत हो रही थी और वे दोनों एक दूसरे को काम सौंप रही थीं। पहले तो जय को दीदी और नीलम पर थोड़ा गुस्सा आया, "मेरा इतना छोटा सा काम करने में उन्हें बोरियत हो रही है? कितने मतलबी हैं ये लोग।" लेकिन फिर अचानक उसे विचार आया "मैंने भी तो यही किया था। दादी का काम करने में मुझे भी बोरियत होती थी। यदि दादी को भी मेरी बोरियत का पता चल गया होगा तो उन्हें भी कितना दुःख हुआ होगा।" आज जय को एहसास हुआ कि किसी के लिए काम करते समय यदि हमारा मन बिगड़ता है तो सामनेवाले को कितना दुःख पहुँचता है। दादी के लिए दिल से काम नहीं करने का उसे बहुत पछतावा हुआ।

बहुत दिनों से पापा, बच्चों के ऐसे मतलबी व्यवहार का निरिक्षण कर रहे थे। दादी के लिए काम करना हो या घर में एक दूसरे की मदद करनी हो, इस बात का बच्चों को हमेशा भार ही लगता था।

एक रात को जब सभी जय के रूम में उसे कंपनी देने के लिए बैठे थे, तब पापा ने अचानक नीलम से पूछा, "नीलम, यदि तुम अपनी सबसे प्रिय चीज़ किसी को दोगी तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

पापा के इस अनेपक्षित प्रश्न को सुनकर नीलम तुरंत बोली, "लेकिन पापा, पहली बात तो यह है कि मैं मेरी प्रिय चीज़ कभी भी किसी को दूँगी ही नहीं तो फिर कैसा लगने का सवाल ही कहाँ है?"

चेहरे पर हल्की निराशा के साथ पापा ने थोड़ा सा सिर

हिलाया। मैगज़िन टेबल पर रखी, कुर्सी पर ही उन्होंने पालती मारी और बोले, "आज मैंने मैगेज़ीन में एक मज़ेदार बात पढ़ी..."

अमरीका में एक किसान को हर साल उत्तम मकई की खेती करने के लिए इनाम मिलता था। लेकिन मज़ेदार बात तो यह थी कि उस किसान का यह तरीका था कि वह अपनी मकई के बीज अपने सभी मित्रों और पड़ोसियों में बाँट देता था। एक रिपॉर्टर को किसान का यह तरीका जानकर अचरज हुआ। उसने उस किसान से पूछा, "क्या तुम्हें कभी ऐसा डर नहीं लगता कि यदि तुम अपने सबसे उत्तम मकई के बीज अपने पड़ोसियों को दे दोगे तो तुम्हारा इनाम उन्हें मिल जाएगा?"

किसान ने जवाब दिया, "क्यों साहब, आपको मालूम नहीं है कि वायु, पके हुए मकई के दानों को एक खेत में से दूसरे खेत में बिखेरती है? यदि मेरे पड़ोसी खराब मकई उगाएँगे तो धीरे धीरे इस नियम के अनुसार मेरी मकई का पाक भी बिगड़ने लगेगा। यदि मुझे अच्छा पाक उगाना हैं तो मेरे लिए वह भी उतना ही महत्व है कि मेरे पड़ोसियों का पाक भी अच्छा हो। और इसलिए मुझे उनकी पूरी मदद करनी ही चाहिए।"

इतनी बात कहकर पापा थोड़े रुके। फिर बच्चों की तरफ देखकर कहा, "हमें हमेशा ऐसा लगता है कि यदि हम औरों को कुछ भी देंगे तो अपना चला जाएगा। लेकिन वास्तव में तो दूसरों को कुछ दें या दूसरों के लिए कुछ भी करें तब से ही सच्चे सुख की शुरूआत होती है। उस किसान की तरह हम भी यदि अपने फल औरों को देंगे तो हमें भी अपने फल मिलते ही रहेंगे। लेकिन सिर्फ अपने ही सुख का विचार करे और औरों की कुछ परवाह नहीं करे तो हमें कभी भी सच्चा सुख प्राप्त नहीं होगा।"

वैसे तो जय को अपनी गलती का एहसास हो ही गया था लेकिन पापा की बातें सुनकर उसने दिल से अपनी गलती का स्वीकार किया और मन ही मन उसने दादी से माफी माँगी।

दूसरे दिन जब उसके पैर की पट्टी खुली तब सबसे पहले वह दौड़ते हुए मम्मी के पास गया, "मम्मी, दादी के लिए खाने की थाली तैयार हो गई हो तो मैं उन्हें दे आऊँ?"

"बेटा, मैं तो तुम्हें कहनेवाली नहीं थी। क्या तुम्हें अपने पैर को और थोड़ा आराम नहीं देना है?"

जय ने सिर हिलाकर ना कहा और हल्की मुस्कान के साथ बोला, "मम्मी, आप सही कह रही थीं। पूरे हफ्ते सभी की मदद लेकर अब मुझे मालूम पड़ा कि लकी तो सचमुच मैं ही हूँ कि औरों के लिए कुछ कर सकता हूँ।"

मम्मी ने जय के सिर पर प्रेम से हाथ फेरा और दादी के लिए खाने की थाली तैयार करके उसे दी।

सर्कस

आज अभय का ध्यान पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लग रहा था और लगेगा भी कैसे? इतना इंतज़ार करने के बाद अंत में आज वह दिन आ गया था।
यह क्लास कब पूरी होगी?

स्कूल के बाद जैसे शेर पीछे पड़ा हो उस तरह से अभय दौड़ा,
अरे अभय, आज घर जाने की इतनी जल्दी क्यों कर रहा है?
दोस्त, आज मैं आरुष के साथ सर्कस देखने जा रहा हूँ।

टिकिट की लाइन में, आरुष और अभय के आगे एक फैमिली थी। मम्मी-पापा के साथ, उनके तीन बच्चे थे।
स्कूल में मेरे फ्रेन्ड ने कहा है कि लकड़ीवाली एक्शन ज़ोरदार है।

मुझे तो लगता है कि प्राणियों का एक्शन बेस्ट होगा।
मुझे तो जोकर को देखना है। उसमें सबसे ज्यादा मज़ा आएगा।

भाई, इन बच्चों को देखकर ऐसा लग रहा है कि ये पहली बार सर्कस देखने आएँ हैं।
सचमुच, कितने खुश दिख रहे हैं।

तभी उन बच्चों के फादर का नंबर आया।

तीन बच्चें और दो बड़ों की टिकिट देना प्लीज़।

चारसौ रुपये।

कितने कहे? चारसौ?

हाँ।

ओह, मुझे तो लगा कि...

और फादर ने अपना वाक्य वही अधूरा छोड़ दिया...

अब क्या करूँ? बच्चों को निराश करने की हिम्मत कहाँ से लाऊँ?

अभय और आरुष को उनकी परिस्थिति का पता चल गया। अभय ने आरुष से कान में कुछ कहा

आरुष ने धीरे से सौ रुपये की नोट अपनी जेब में से निकालकर जमीन पर गिरा दी।

फिर नीचे झूककर अभय ने नोट ली और बच्चों के पिता को दी।

एक्सक्यूज़ मी सर, यह आपके पैसे जमीन पर गिर गए थे।

मेरे पैसे? नहीं हो सकते।

हाँ सर। अभी आपने जेब में से जब पैसे निकाले तब यह गिर गए थे। यह आपके ही हैं।

थैन्क यू बेटा। दिल से तुम्हारा आभार मानता हूँ।

जब तक वह परिवार सर्कस ग्राउन्ड में अंदर जाए तब तक आरुष और अभय ने इंतज़ार किया।

चलो, अब निकलें?

और फिर अभय और आरुष घर जाने के लिए निकले। टिकिट खरीदने के लिए अब उनके पास पूरे पैसे नहीं थे।

बहुत ही उत्सुकता होते हुए भी उस रात अभय ने सर्कस नहीं देखा। लेकिन सर्कस ग्राउन्ड के अंदर जा रहे उन तीन बच्चों के हँसते हुए चेहरे याद आते ही उसे अनोखे सुख का अनुभव हुआ। वह सुख सर्कस देखने के सुख से अनेक गुना ज्यादा था।

चलो खेलें

१ चलो शब्दों का खेल खेलते हैं। यहाँ दिए गए अक्षरों में से कोई भी चार शब्द बनाइए, जिसमें बीच में दिए गए अक्षर का इस्तेमाल हर एक शब्द में करना होगा।

ल का म ड़ी र नौ — क

व न ल का भो पू — ज

र का चे भी न वे — त

म द चा र आ क — द

ग न र ज त म — ग

म स ग प च ल — र

ल ण स र म भ — क्ष

अ पा ऩ व चं ल — च

२

दिए गए चित्र में कौन सा प्राणी है,
उसे पहचानो और उसका नाम बताओ।

१

२

३

३

दिए गए चार चित्रों में से
अलग दिख रहा हो
ऐसा एक चित्र ढूंढो।

१

२

३

४

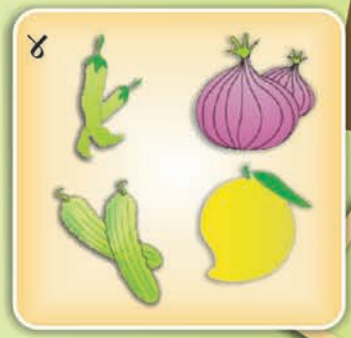

ऐतिहासिक गौरवगाथा

यह उस समय की बात है जब महान आचार्य हिरभद्र सुरि जी की ज्ञान साधना बहुत फैल रही थी। आचार्य सुरि जी के धर्मोपदेश से बहुत से लोग उनके धर्म भक्त हो गए थे और बहुत से लोग धर्म की तरफ मुड़ रहे थे। सुरि जी के धर्मोपदेश से प्रेरणा लेकर काफी लोग धर्म का और लोक सेवा का अनुसरण करने लगे थे।

सुरि जी के उपासकों में लल्लीग नाम के एक श्रावक थे। जैसा प्रेम उन्हें धर्म के प्रति था उतनी ही उन्हें आस्था गुरु के प्रति थी। गुरु के वचन को वह हमेशा शिरोमान्य करते और गुरु की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते।

लल्लीग की आर्थिक स्थिति बिल्कुल सामान्य थी। आज काम करें और कल खाएँ इस तरह की। और कभी तो पूरे दिन तनतोड़ मेहनत करने के बावजूद भी पेट भरने तक का नहीं मिलता। परिवार का लालन पालन कैसे करें उसकी चिंता उन्हें बहुत होती। परिवार के निर्वाह के लिए वह बहुत परिश्रम करते। यदि कोई कहता यह काम करने से लाभ होगा तो लल्लीग तैयार हो जाते। वह अपनी पूरी शक्ति उसी में लगा देते। लेकिन भाग्य जैसे उनसे रुठ गया था। किसी भी काम में उन्हें सफलता मिलती ही नहीं थी।

इस तरह बहुत ही मुसीबत से उनका जीवन चल रहा था। फिर भी उनकी धर्म श्रद्धा और गुरु भक्ति में ज़रा भी कमी नहीं आई। बल्कि जैसे जैसे भाग्य बिगड़े, वैसे वैसे उनकी आंतरिक समृद्धि बढ़ती गई। बिल्कुल भी निराश हुए बिना वह अपने प्रयास ज़ारी रखते। उनकी स्थिति भले ही दरिद्र थी लेकिन उनका दिल दरिद्र नहीं था। वह तो समुद्र जैसा विशाल था। उनके मन में तो लोक सेवा और धर्म में ही पैसे खर्च करने की बहुत तमन्ना रहती थी।

इस तरह समय निकलता जा रहा था। एक बार उनकी श्रद्धा, भक्ति और प्रयत्न सफल हुए और उनके भाग्य का पहिया घूमने लगा। लल्लीग का व्यापार ऐसा जमा कि बड़े व्यापारियों में उनकी गिनती होने लगी। लोक सेवा और धर्म के लिए सत्कार्य करने के जो उन्होंने सपने देखे थे वह पूरे करने के लिए अब उनके पास अपार संपत्ति थी। और वे धन के प्रवाह

को उस ओर मोड़ने लगे।

लल्लीग ने सुना था कि धर्म पुस्तकें लिखाना महान पुण्य का काम है। उनके गुरु हरिभद्र सुरि जी बहुत ही विद्वान और समर्थ शास्त्रकार थे। उनका बहुत सा समय शास्त्रों के सर्जन में ही जाता था। लल्लीग गुरु के शास्त्र सर्जन के काम में बड़े दिल से धन खर्च करने लगे। उनको लगा, तीर्थंकरों की गैरमौजूदगी में गुरु की वाणी ही हमें धर्म का सही रास्ता बताती हैं। इसलिए उनकी वाणी को सुरक्षित रखना और उसका सर्जन कराना वह प्रत्येक श्रावक का धर्म कहलाता है।

और इस तरह लल्लीग की भावना और अधिक बढ़ती गई। एक तरफ धन की वृद्धि होती थी तो दूसरी तरफ नए-नए सत्कार्य करने की तरफ उनका मन दौड़ने लगता।

एक बार उन्हें मालूम हुआ कि शास्त्र सर्जन के कार्य के लिए गुरुजी को दिन का समय कम पड़ रहा है। इसलिए रात के समय का उपयोग किए बिना निश्चित काम पूरा होना मुश्किल है। लेकिन आचार्य महाराज ने तो पंच महाव्रत धारण किए होते हैं। इसलिए रात के समय रोशनी का उपयोग कैसे कर सकते हैं?

लल्लीग को लगा, "ऐसा तो क्या किया जाए कि सुरि जी के लिए उपाश्रय में निर्दोष रोशनी की व्यवस्था हो सके। इसके लिए मेरा जितना भी धन खर्च हो, उसके लिए मैं तैयार हूँ।"

और एक दिन उनके सुनने में आया कि किसी प्रदेश में एक खास प्रकार का रत्न मिलता है, जो रात को दीपक की तरह रोशनी देता है। बस, फिर तो किस बात की देर? लल्लीग ने वह अमूल्य रत्न लाकर आचार्य महाराज की सेवा में रख दिया। उस रत्न से उपाश्रय का कोना-कोना रोशन हो उठा। और उस रोशनी में सुरि जी के शास्त्र रचने का काम तेज़ी

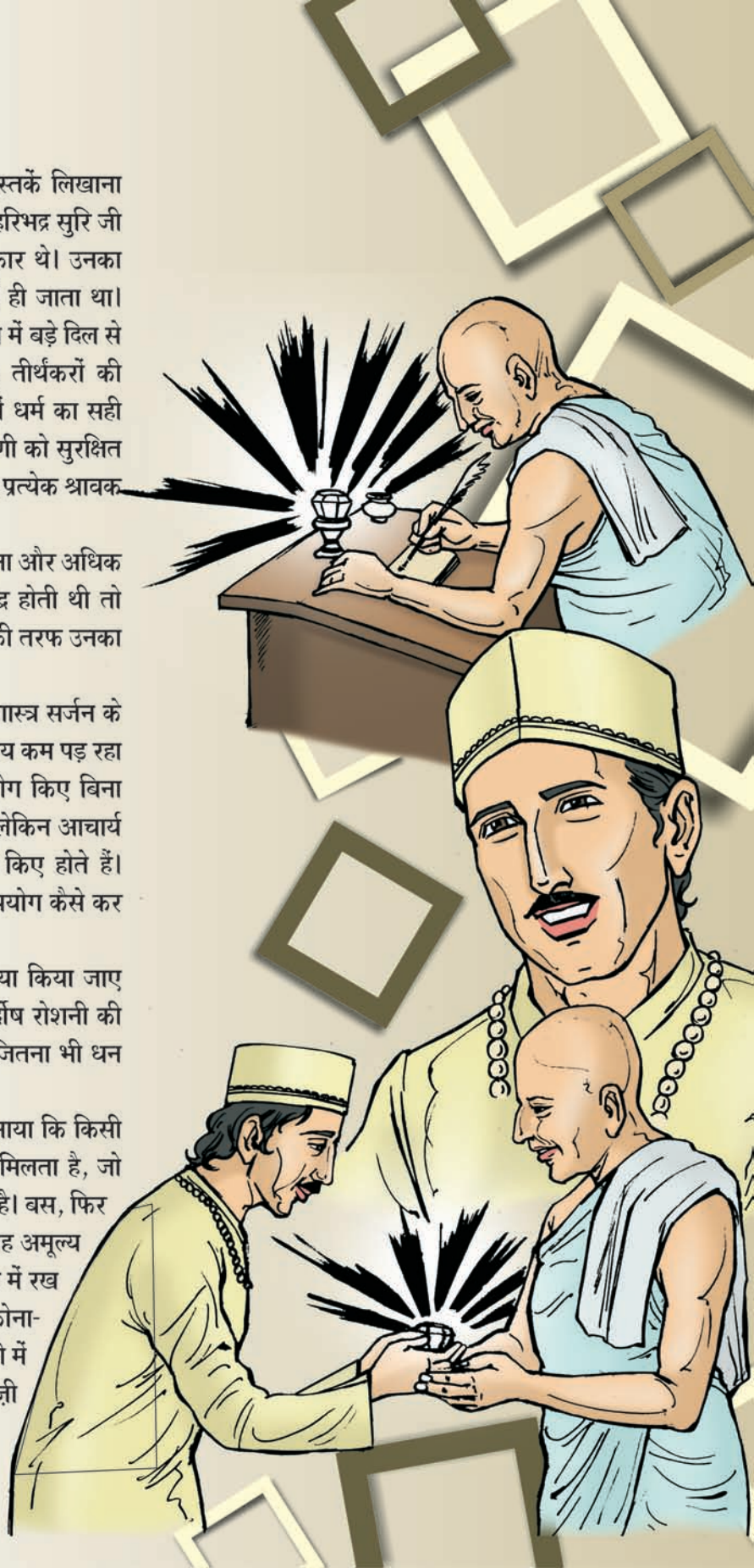

से चलने लगा।

रत्न की तरह लल्लीग की भावना का प्रकाश भी फैलने लगा। लोग भी उनकी भावना की प्रशंसा करने लगे। लल्लीग की भावना बढ़ती ही गई। वे तो इतना ही सोचते कि, "यह संयोग और संपत्ति मिली हैं तो इसका जितना सदुपयोग हो सके उतना करूँ। ऐसा धर्म और ऐसे सद्‌गुरु का संयोग बार-बार नहीं मिलता।"

एक बार लल्लीग ने सुरि जी से आतिथ्य की महिमा सुनी कि, अतिथि तो घर आए हुए देव ही कहलाते हैं। बस, लल्लीग का मन उस तरफ दौड़ने लगा। उन्होंने वहाँ एक रसोईघर की शुरूआत की। जितने ज्यादा अतिथि आते, उतना लल्लीग को ज्यादा आनंद होने लगा।

उन्हें लगा, "भोजन के समय जब हम खाना खाएँ, तब गाँव का कोई भी व्यक्ति बिना भोजन के रहे तो उसका दोष हमें ही लगेगा।" इसलिए उन्होंने भोजन के समय, गाँव और दूसरे गाँव से आनेवाले सभी अतिथि, साधु-संतों के लिए अपने घर के द्वार खोल दिए थे। जो भी आता उसे उनके यहाँ आदरसहित भोजन मिलने लगा।

फिर तो गाँव की सीमा से कोई अतिथि भूखा न जाए, यह लल्लीग का जीवनव्रत बन गया। लल्लीग का घर अतिथि गृह बन गया। उनके घर भोजन के समय सेंकडों लोगों की भीड़ इकट्ठी होती।

भोजन से तृप्त होकर लोग लल्लीग को दुआ देते, तब लल्लीग नम्रतापूर्वक कहते, "यह सब प्रताप गुरु की कृपा का और उनके धर्म बोध का है। गुरु का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है।"

इससे सभी खाना खानेवाले गुरु हरिभद्रजी के पास जाकर "बहुत जीयो भवविरहसूरी" ऐसा जय जयकार गाते और बदले में गुरुजी सभी को आशीर्वाद देते। यह दृश्य देखकर, भाविक लल्लीग को तृप्ति मिलती और अपना जीवन सफल हुआ ऐसा लगता।

सभी लल्लीग की गुरुभक्ति, धर्मप्रेम और आतिथ्य भावना को मन ही मन नमन करते और कहते : गुरुभक्त और अतिथि भावना हो तो श्रावक लल्लीग जैसी।

अपने आपको परखकर देखो

इस अंक को पढ़ने के बाद आप नीचे दी गई प्रत्येक परिस्थिति में निधि को अ, ब या क में से क्या करने की सलाह दोगे?

१ आज रिसेस के बाद लाइब्रेरी का पिरीयड था। लाइब्ररी के एक कोने में स्तुति एकदम डिप्रेस होकर बैठी थी। कल उसकी गणित की टेस्ट है। और उसे कुछ सवाल नहीं आ रहे थे।

अ. लाइब्रेरी में नई बुक्स का कलेक्शन आया था, इसलिए निधि को अपनी मनपसंद बुक पढ़ने बैठ जाना चाहिए।

ब. स्तुति को उसे सवाल हल करना सिखाना चाहिए।

क. स्तुति को उसे डाँटना चाहिए कि पूरे टर्म मस्ती करती है और फिर टेस्ट के पहले अगले दिन डिप्रेस होकर बैठ जाती है।

२ निधि का लाइब्रेरी के बाद विज्ञान का पिरीयड था। लेकिन ऐसे समाचार आए कि पाठक सर बीमार है और उन्हें होस्पीटल में दाखिल किया है।

अ. निधि को सर की नेगेटिव बातों में ही पिरीयड बीता देना चाहिए।
ब. निधि को प्रार्थना करनी चाहिए कि डॉक्टर उनको पूरे साल बेड रेस्ट करने की सलाह दे और उनके बदले में उन्हें कोई नए टीचर मिल जाएँ।
क. पाठक सर जल्दी ठीक हो जाएँ ऐसी उनके लिए दिल से प्रार्थना करनी चाहिए।

३ आज निधि की रिचा के साथ डिबेट भी थी। निधि का परफोमन्स तो अच्छा था। लेकिन रिचा बहुत नर्वस थी।

अ. रिचा को नर्वस देखकर निधि ने उसे बहुत प्रोत्साहन देना चाहिए ताकि रिचा को हिम्मत आए।
ब. पहली बार निधि का परफोमन्स रिचा से अच्छा होने की वजह से खुश होना चाहिए।
क. निधि को ऐसा भाव रखना चाहिए कि रिचा अब से कभी डिबेट में भाग न ले तो अच्छा।

जवाब : १-ब, २-क, ३-अ

मीठी यादें

साल २००३ की बात है। अडालज में अपरिणित बहनों की ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन हुआ था। एक ब्रह्मचारी बहन को शिविर के लिए बाहरगाँव से अडालज आना था। इससे पहले उन्होंने कभी भी अकेले सफर नहीं किया था इसलिए उन्होंने अपनी मम्मी को साथ में लाने की परमिशन माँगी। लेकिन इस मामले में उन्हें परमिशन नहीं मिली और उन्हें अकेले ही शिविर में आने के लिए कहा गया।

वह अकेली आई तो सही, लेकिन शिविर पूरा होते ही उसे अपने घर जल्दी से पहुँच जाने की हड़बड़ी हुई। शिविर के बाद सभी बहनों ने नीरू माँ के दर्शन करके निकलने का तप किया। तब इस बहन को लगा, "दूसरी सभी बहनों को तो एक दूसरे का साथ है, लेकिन मुझे तो अकेले ही जाना है। अभी ही तो नीरू माँ सत्संग करके गए हैं। तो दोबारा दर्शन करने जाने का क्या अर्थ है?" अकेले जाना था इसलिए उन्हें जल्दी से निकल जाने की इच्छा हो रही थी।

अंत में सभी बहनें नीरू माँ के दर्शन करने गई तब वह बहन भी उनके साथ गई। जब उनके दर्शन की बारी आई, तब नीरू माँ ने उनसे पूछा, "तुम कैसे जाओगी? चिंता नहीं करना, पहुँच जाओगी। हं!" नीरू माँ का यह वाक्य उस बहन को बहुत ही छू गया। उनमें बहुत हिम्मत आ गई। उन्हें लगा, "नीरू माँ को मेरा कितना खयाल है। मुझे दिक्कत नहीं होगी। अब रात के बारह बजे या दो बजे भी मैं अकेली जा सकूँगी।"

इस तरह नीरू माँ सभी का बहुत ध्यान रखते थे। उनके एक ही वाक्य में इतना अधिक बल रहता कि सामनेवाले का सारा भय और असुरक्षा का एहसास छूट जाता था और उसमें हिम्मत आ जाती थी।

पज़ल के जवाब

2.

१. भेड़
२. कुत्ता
३. मगरमच्छ

3.

१.
२.
३.
४.

सीमंधर सिटी GNC Day

Akram Express

April 2014
Year : 2, Issue : 1
Conti. Issue No.:13

BALVIGNAN
Fun 'n' Gyan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.

अप्रैल २०१४

क़ीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

अक्रम एक्सप्रेस

औरों के लिए कर गुज़रना

३ दादाजी कहते हैं...

४ यह तो नई ही बात!

अनुक्रमणिका

६ पुण्यशाली कौन?

९ सर्कस

१२ चलो खेलें

१४ ऐतिहासिक गौरवगाथा

१७ अपने आपको परखकर देखो!

१८ मीठी यादें

१९ GNC Day की झलक

संपादकीय

बालमित्रों,

आपने अपने दादा-दादी या नाना-नानी को देखा ही होगा। वे हमेशा अड़ोस-पड़ोस में, सगे-संबंधियों में या फिर किसी और को भी ज़रूरत के समय मदद करते ही हैं। मदद करते समय वे कभी भी अपना-पराया नहीं देखते। क्या हम भी ऐसा कर सकते हैं? सोचिए तो सही।

औरों के लिए कर गुज़रने की भावनावाले लोग कैसे होते हैं? उसके लिए जो ज़रूरी है, वह नोबिलिटी कैसे आएगी, इस तरह का जीवन जीने से हमें क्या फायदा होगा, है आदि की सुंदर समझ परम पूज्य दादाश्री ने दी है, जो सरल उदाहरण के साथ इस अंक में दी गई है। तो आओ, इस बहुत ही मज़ेदार अंक को पढ़ें और हम भी अपने जीवन में औरों की मदद कर सकें, इस तरह जीवन बिताएँ।

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक: १
अखंड क्रमांक: १३
अप्रैल २०१४

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपयें
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपयें
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

- डिम्पल महेता

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मनुष्य जीवन की विशेषता क्या है ?

दादाश्री : मनुष्य जीवन परोपकार के लिए है। परोपकार मतलब मन का उपयोग भी औरों के लिए करना, वाणी का उपयोग भी औरों के लिए करना और वर्तन का उपयोग भी औरों के लिए करना। जो औरों के लिए कर गुज़रता है, उसके घर क्या रहेगा?

प्रश्नकर्ता : लाभ तो होगा ही न।

दादाश्री : लोग अपने खुद के सुख में ही मग्न हैं। दूसरों के सुख में मेरा सुख है, ऐसी सभी बातें छूटती ही जा रही हैं। "दूसरों के सुख में मैं सुखी हूँ" ऐसा सब अपने यहाँ खत्म हो गया है और अपने ही सुख में मग्न हैं कि मुझे तो चाय मिल गई, बस!

भगवान कहते हैं कि "मन-वचन-काया का उपयोग औरों के लिए करो, फिर तुम्हें कुछ भी दुःख आए तो मुझ से कहना" औरों को कुछ भी देना शुरू किया तभी से आनंद शुरू हो जाता है। लेकिन लोग तो यही समझते हैं कि "यदि मैं दे दूँगा तो मेरा चला जाएगा।"

दैवीय गुण किसे कहेंगे? "तेरा वह तेरा, लेकिन जो मेरा है, वह भी तेरा।" जो परोपकारी होते हैं, वे अपना भी औरों को दे देते हैं। तुम दस बार उसका नुकसान करो फिर भी तुम्हें जब काम पड़े तब वह तुम्हारी हेल्प करें। तुम फिर से उसका नुकसान करो, फिर भी तुम्हें काम पड़े तो उस घड़ी वह तुम्हारी हेल्प करे। उसका स्वभाव ही हेल्प करने का है। इसलिए हम समझ जाते हैं कि यह "सुपरह्यूमन" है।

अगर अभी तुम किसी के दिल को ठंडक दोगे तो उसका फल तो आएगा ही। उसकी शत प्रतिशत गारन्टी लिखकर देता हूँ। "सुख की दुकान" खोलना, यही मेरा व्यापार है। ये भाई मुझे मिलें और यदि उन्हें लाभ न हो फिर किस काम का? जगत् का काम करोगे तब तुम्हारा काम तो यों ही चलता रहेगा और तब तुम्हें आश्चर्य होगा!

धर्म की शुरूआत ही ओव्लाइज़िंग नेचर से होती है। ओव्लाइज़िंग नेचर यानी औरों के लिए कुछ भी कर गुज़रने का स्वभाव।

यह

हमारे बर्ताव से किसी का दुःख कम हो या न भी हो, लेकिन भाव तो ऐसा ही रहना चाहिए कि मेरे पास यदि पैसा है तो मुझे किसी के दुःख को कम करना चाहिए। अकल हो तो मेरी अकल से किसी को समझाकर उसका दुःख कम करना है। अपने पास जो कुछ भी हो उससे हेल्प करनी है।

दो

नई

यह लाइफ यदि परोपकार में बीतेगी तो तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा, तुम्हें किसी भी तरह की अड़चन नहीं आएगी। तुम्हारी जो भी इच्छाएँ हैं, वे सभी पूरी होगी।

इस जगत् का कुदरती नियम क्या है कि तुम्हारे खुद के फल औरों को दे दोगे तो कुदरत तुम्हारा चला लेगी।

बात!

आम का पेड़ अपने आम कितने खा लेता होगा? उसके फल, लकड़ी, पत्ते सबकुछ औरों के लिए ही उपयोग में आते हैं न! जिसके परिणाम स्वरूप वह उच्च गति पाता है।

ही

परोपकार करनेवाले सामनेवाले की समझ को नहीं देखते। क्या आम का पेड़ देखता है कि उसके फल खानेवाला खराब है या अच्छा है? इस तरह का जीवन जीने से धीरे-धीरे जीवों की ऊर्ध्वगति होती हैं।

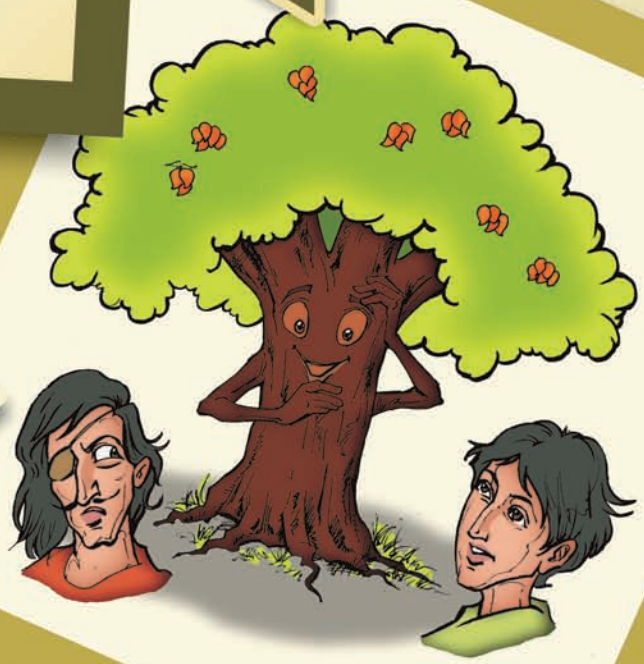

पुण्यशाली कौन?

"जय। दादी को यह खाने की थाली दे आओ तो बेटा" मम्मी ने रसोई में से आवाज़ लगाई।

"लेकिन मेरे दोस्त मेरा इंतज़ार कर रहे हैं, मम्मी। नीलम या रैना दीदी से कह दो न।" जय खीजकर बोला।

"इतना छोटा सा काम करने में भी तुझे तकलीफ हो रही है?" मम्मी की आवाज़ कुछ कड़ी हो गई।

"ठीक है, दे आता हूँ। गुस्सा मत करो। सचमुच, दादी कितनी लकी है कि सारा दिन लोग उनकी सेवा में मौजूद ही रहते हैं" जय व्यंग्य में बोला।

जय को थाली देते हुए मम्मी बोली, "बेटा, लकी तो हम हैं कि हम उनके लिए कुछ कर सकते हैं। जिन्हें औरों के लिए कुछ कर गुज़रने का मौका मिलता है, वह लोग पुण्यशाली कहलाते हैं।"

जय मम्मी की बात से सहमत नहीं था लेकिन उसने कोई बहस नहीं की। छः महीने से दादी उनके घर पर रह रही थीं। वैसे तो वे उसकी सगी दादी नहीं थी, पड़ोस में रहती थी। लेकिन वे अकेली रहती थीं इसलिए जय के मम्मी-पापा उनकी देखभाल करते थे। पर जब से दादी की तबियत खराब रहने लगी तब से जय के मम्मी-पापा ने आग्रह करके उन्हें अपने घर में ही रहने के लिए बुला लिया। और तब से जय को भी दादी का थोड़ा बहुत काम करना पड़ता था। जो उसे हमेशा खटकता रहता था। मौका मिलते ही वह हमेशा काम से बचने की कोशिश करता था।

दादी को फटाफट थाली देकर वह अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने के लिए दौड़ा। गेम अच्छी चल रही थी। अचानक एक कैच पकड़ने के लिए जय कूदा और धम्म से जमीन पर गिर गया। कैच तो पकड़ लिया लेकिन पैर में ज़ोरदार मोच आ गई। डॉक्टर ने पट्टी बाँध दी और एक हफ्ते के लिए पलंग पर पैर ऊँचा रखकर सोते रहने के लिए कहा।

पैर में पट्टी बंधी होने के कारण जय खुश नहीं था। लेकिन पूरे हफ्ते तक उसे किसी के लिए कुछ भी काम नहीं करना पड़ेगा बल्कि घर के लोग उसका काम करेंगे, ऐसा सोचकर उसे बहुत मज़ा आ रहा था।

थोड़ी देर बाद मम्मी उसके कमरे में आई, "बेटा, कुछ लेकर आऊँ तुम्हारे लिए?"

"हमम... कॉल्ड कॉफी विद आइस्क्रीम" जय ने थोड़ा सोचकर अपनी फरमाईश पेश की। थोड़ी देर बाद जय को अपनी फेवरिट

कोमिक बुक पढ़ने का मन हुआ। उसने मम्मी को ज़ोर से आवाज़ लगाई, "मम्मी!!"

नीलम दौड़ती हुई उसके रूम में आई, "क्या हुआ जय?"

"टेबल पर से मुझे कोमिक बुक दो।" जय ने ऑर्डर किया।

दो-तीन दिन तक जय ने उसे मिलनेवाली राजाशाही ट्रीटमेन्ट का मज़ा लिया। लेकिन आखिर में वह उससे ऊब गया। सभी बातों के लिए मदद लेना, उसे परवशता लगने लगी।

और एक दिन नीलम और दीदी की बातचीत उसके कान में पड़ते ही जय की आँखों से टप-टप आँसूँ गिरने लगे। दीदी और नीलम को जय का काम करने में बोरियत हो रही थी और वे दोनों एक दूसरे को काम सौंप रही थीं। पहले तो जय को दीदी और नीलम पर थोड़ा गुस्सा आया, "मेरा इतना छोटा सा काम करने में उन्हें बोरियत हो रही है? कितने मतलबी हैं ये लोग।" लेकिन फिर अचानक उसे विचार आया "मैंने भी तो यही किया था। दादी का काम करने में मुझे भी बोरियत होती थी। यदि दादी को भी मेरी बोरियत का पता चल गया होगा तो उन्हें भी कितना दुःख हुआ होगा।" आज जय को एहसास हुआ कि किसी के लिए काम करते समय यदि हमारा मन बिगड़ता है तो सामनेवाले को कितना दुःख पहुँचता है। दादी के लिए दिल से काम नहीं करने का उसे बहुत पछतावा हुआ।

बहुत दिनों से पापा, बच्चों के ऐसे मतलबी व्यवहार का निरिक्षण कर रहे थे। दादी के लिए काम करना हो या घर में एक दूसरे की मदद करनी हो, इस बात का बच्चों को हमेशा भार ही लगता था।

एक रात को जब सभी जय के रूम में उसे कंपनी देने के लिए बैठे थे, तब पापा ने अचानक नीलम से पूछा, "नीलम, यदि तुम अपनी सबसे प्रिय चीज़ किसी को दोगी तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

पापा के इस अनेपक्षित प्रश्न को सुनकर नीलम तुरंत बोली, "लेकिन पापा, पहली बात तो यह है कि मैं मेरी प्रिय चीज़ कभी भी किसी को दूँगी ही नहीं तो फिर कैसा लगने का सवाल ही कहाँ है?"

चेहरे पर हल्की निराशा के साथ पापा ने थोड़ा सा सिर

हिलाया। मैगज़िन टेबल पर रखी, कुर्सी पर ही उन्होंने पालती मारी और बोले, "आज मैंने मैगेज़ीन में एक मज़ेदार बात पढ़ी..."

अमरीका में एक किसान को हर साल उत्तम मकई की खेती करने के लिए इनाम मिलता था। लेकिन मज़ेदार बात तो यह थी कि उस किसान का यह तरीका था कि वह अपनी मकई के बीज अपने सभी मित्रों और पड़ोसियों में बाँट देता था। एक रिपॉर्टर को किसान का यह तरीका जानकर अचरज हुआ। उसने उस किसान से पूछा, "क्या तुम्हें कभी ऐसा डर नहीं लगता कि यदि तुम अपने सबसे उत्तम मकई के बीज अपने पड़ोसियों को दे दोगे तो तुम्हारा इनाम उन्हें मिल जाएगा?"

किसान ने जवाब दिया, "क्यों साहब, आपको मालूम नहीं है कि वायु, पके हुए मकई के दानों को एक खेत में से दूसरे खेत में बिखेरती है? यदि मेरे पड़ोसी खराब मकई उगाएँगे तो धीरे धीरे इस नियम के अनुसार मेरी मकई का पाक भी बिगड़ने लगेगा। यदि मुझे अच्छा पाक उगाना हैं तो मेरे लिए वह भी उतना ही महत्व है कि मेरे पड़ोसियों का पाक भी अच्छा हो। और इसलिए मुझे उनकी पूरी मदद करनी ही चाहिए।"

इतनी बात कहकर पापा थोड़े रुके। फिर बच्चों की तरफ देखकर कहा, "हमें हमेशा ऐसा लगता है कि यदि हम औरों को कुछ भी देंगे तो अपना चला जाएगा। लेकिन वास्तव में तो दूसरों को कुछ दें या दूसरों के लिए कुछ भी करें तब से ही सच्चे सुख की शुरूआत होती है। उस किसान की तरह हम भी यदि अपने फल औरों को देंगे तो हमें भी अपने फल मिलते ही रहेंगे। लेकिन सिर्फ अपने ही सुख का विचार करे और औरों की कुछ परवाह नहीं करे तो हमें कभी भी सच्चा सुख प्राप्त नहीं होगा।"

वैसे तो जय को अपनी गलती का एहसास हो ही गया था लेकिन पापा की बातें सुनकर उसने दिल से अपनी गलती का स्वीकार किया और मन ही मन उसने दादी से माफी माँगी।

दूसरे दिन जब उसके पैर की पट्टी खुली तब सबसे पहले वह दौड़ते हुए मम्मी के पास गया, "मम्मी, दादी के लिए खाने की थाली तैयार हो गई हो तो मैं उन्हें दे आऊँ?"

"बेटा, मैं तो तुम्हें कहनेवाली नहीं थी। क्या तुम्हें अपने पैर को और थोड़ा आराम नहीं देना है?"

जय ने सिर हिलाकर ना कहा और हल्की मुस्कान के साथ बोला, "मम्मी, आप सही कह रही थीं। पूरे हफ्ते सभी की मदद लेकर अब मुझे मालूम पड़ा कि लकी तो सचमुच मैं ही हूँ कि औरों के लिए कुछ कर सकता हूँ।"

मम्मी ने जय के सिर पर प्रेम से हाथ फेरा और दादी के लिए खाने की थाली तैयार करके उसे दी।

सर्कस

आज अभय का ध्यान पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लग रहा था और लगेगा भी कैसे? इतना इंतज़ार करने के बाद अंत में आज वह दिन आ गया था।
यह क्लास कब पूरी होगी?

स्कूल के बाद जैसे शेर पीछे पड़ा हो उस तरह से अभय दौड़ा,
अरे अभय, आज घर जाने की इतनी जल्दी क्यों कर रहा है?
दोस्त, आज मैं आरुष के साथ सर्कस देखने जा रहा हूँ।

टिकिट की लाइन में, आरुष और अभय के आगे एक फैमिली थी। मम्मी-पापा के साथ, उनके तीन बच्चे थे।
स्कूल में मेरे फ्रेन्ड ने कहा है कि लकड़ीवाली एक्शन ज़ोरदार है।

मुझे तो लगता है कि प्राणियों का एक्शन बेस्ट होगा।
मुझे तो जोकर को देखना है। उसमें सबसे ज्यादा मज़ा आएगा।

भाई, इन बच्चों को देखकर ऐसा लग रहा है कि ये पहली बार सर्कस देखने आएँ हैं।
सचमुच, कितने खुश दिख रहे हैं।

तभी उन बच्चों के फादर का नंबर आया।

तीन बच्चें और दो बड़ों की टिकिट देना प्लीज़।

चारसौ रुपये।

कितने कहे? चारसौ?

हाँ।

ओह, मुझे तो लगा कि...

और फादर ने अपना वाक्य वही अधूरा छोड़ दिया...

अब क्या करूँ? बच्चों को निराश करने की हिम्मत कहाँ से लाऊँ?

अभय और आरुष को उनकी परिस्थिति का पता चल गया। अभय ने आरुष से कान में कुछ कहा

आरुष ने धीरे से सौ रुपये की नोट अपनी जेब में से निकालकर जमीन पर गिरा दी।

फिर नीचे झूककर अभय ने नोट ली और बच्चों के पिता को दी।

एक्सक्यूज़ मी सर, यह आपके पैसे जमीन पर गिर गए थे।

मेरे पैसे? नहीं हो सकते।

हाँ सर। अभी आपने जेब में से जब पैसे निकाले तब यह गिर गए थे। यह आपके ही हैं।

थैन्क यू बेटा। दिल से तुम्हारा आभार मानता हूँ।

जब तक वह परिवार सर्कस ग्राउन्ड में अंदर जाए तब तक आरुष और अभय ने इंतज़ार किया।

चलो, अब निकलें?

और फिर अभय और आरुष घर जाने के लिए निकले। टिकिट खरीदने के लिए अब उनके पास पूरे पैसे नहीं थे।

बहुत ही उत्सुकता होते हुए भी उस रात अभय ने सर्कस नहीं देखा। लेकिन सर्कस ग्राउन्ड के अंदर जा रहे उन तीन बच्चों के हँसते हुए चेहरे याद आते ही उसे अनोखे सुख का अनुभव हुआ। वह सुख सर्कस देखने के सुख से अनेक गुना ज्यादा था।

चलो खेलें

१ चलो शब्दों का खेल खेलते हैं। यहाँ दिए गए अक्षरों में से कोई भी चार शब्द बनाइए, जिसमें बीच में दिए गए अक्षर का इस्तेमाल हर एक शब्द में करना होगा।

क : ल, का, म, ड़ी, र, नौ

ज : व, न, ल, का, भो, पू

त : र, का, चे, भी, न, वे

द : म, द, चा, र, आ, क

ग : ग, न, र, ज, त, म

र : म, स, ग, प, च, ल

क्ष : ल, ण, स, र, म, भ

च : अ, पा, ऩ, व, चं, ल

२

दिए गए चित्र में कौन सा प्राणी है,
उसे पहचानो और उसका नाम बताओ।

१

२

३

३

दिए गए चार चित्रों में से
अलग दिख रहा हो
ऐसा एक चित्र ढूंढो।

१

२

३

४

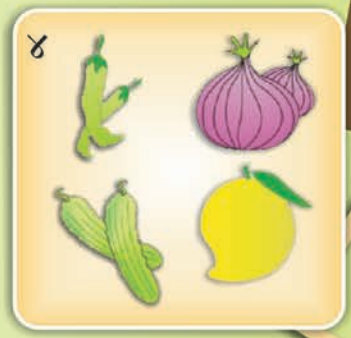

ऐतिहासिक गौरवगाथा

यह उस समय की बात है जब महान आचार्य हिरभद्र सुरि जी की ज्ञान साधना बहुत फैल रही थी। आचार्य सुरि जी के धर्मोपदेश से बहुत से लोग उनके धर्म भक्त हो गए थे और बहुत से लोग धर्म की तरफ मुड़ रहे थे। सुरि जी के धर्मोपदेश से प्रेरणा लेकर काफी लोग धर्म का और लोक सेवा का अनुसरण करने लगे थे।

सुरि जी के उपासकों में लल्लीग नाम के एक श्रावक थे। जैसा प्रेम उन्हें धर्म के प्रति था उतनी ही उन्हें आस्था गुरु के प्रति थी। गुरु के वचन को वह हमेशा शिरोमान्य करते और गुरु की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते।

लल्लीग की आर्थिक स्थिति बिल्कुल सामान्य थी। आज काम करें और कल खाएँ इस तरह की। और कभी तो पूरे दिन तनतोड़ मेहनत करने के बावजूद भी पेट भरने तक का नहीं मिलता। परिवार का लालन पालन कैसे करें उसकी चिंता उन्हें बहुत होती। परिवार के निर्वाह के लिए वह बहुत परिश्रम करते। यदि कोई कहता यह काम करने से लाभ होगा तो लल्लीग तैयार हो जाते। वह अपनी पूरी शक्ति उसी में लगा देते। लेकिन भाग्य जैसे उनसे रुठ गया था। किसी भी काम में उन्हें सफलता मिलती ही नहीं थी।

इस तरह बहुत ही मुसीबत से उनका जीवन चल रहा था। फिर भी उनकी धर्म श्रद्धा और गुरु भक्ति में ज़रा भी कमी नहीं आई। बल्कि जैसे जैसे भाग्य बिगड़े, वैसे वैसे उनकी आंतरिक समृद्धि बढ़ती गई। बिल्कुल भी निराश हुए बिना वह अपने प्रयास ज़ारी रखते। उनकी स्थिति भले ही दरिद्र थी लेकिन उनका दिल दरिद्र नहीं था। वह तो समुद्र जैसा विशाल था। उनके मन में तो लोक सेवा और धर्म में ही पैसे खर्च करने की बहुत तमन्ना रहती थी।

इस तरह समय निकलता जा रहा था। एक बार उनकी श्रद्धा, भक्ति और प्रयत्न सफल हुए और उनके भाग्य का पहिया घूमने लगा। लल्लीग का व्यापार ऐसा जमा कि बड़े व्यापारियों में उनकी गिनती होने लगी। लोक सेवा और धर्म के लिए सत्कार्य करने के जो उन्होंने सपने देखे थे वह पूरे करने के लिए अब उनके पास अपार संपत्ति थी। और वे धन के प्रवाह

को उस ओर मोड़ने लगे।

लल्लीग ने सुना था कि धर्म पुस्तकें लिखाना महान पुण्य का काम है। उनके गुरु हरिभद्र सुरि जी बहुत ही विद्वान और समर्थ शास्त्रकार थे। उनका बहुत सा समय शास्त्रों के सर्जन में ही जाता था। लल्लीग गुरु के शास्त्र सर्जन के काम में बड़े दिल से धन खर्च करने लगे। उनको लगा, तीर्थंकरों की गैरमौजूदगी में गुरु की वाणी ही हमें धर्म का सही रास्ता बताती हैं। इसलिए उनकी वाणी को सुरक्षित रखना और उसका सर्जन कराना वह प्रत्येक श्रावक का धर्म कहलाता है।

और इस तरह लल्लीग की भावना और अधिक बढ़ती गई। एक तरफ धन की वृद्धि होती थी तो दूसरी तरफ नए-नए सत्कार्य करने की तरफ उनका मन दौड़ने लगता।

एक बार उन्हें मालूम हुआ कि शास्त्र सर्जन के कार्य के लिए गुरुजी को दिन का समय कम पड़ रहा है। इसलिए रात के समय का उपयोग किए बिना निश्चित काम पूरा होना मुश्किल है। लेकिन आचार्य महाराज ने तो पंच महाव्रत धारण किए होते हैं। इसलिए रात के समय रोशनी का उपयोग कैसे कर सकते हैं?

लल्लीग को लगा, "ऐसा तो क्या किया जाए कि सुरि जी के लिए उपाश्रय में निर्दोष रोशनी की व्यवस्था हो सके। इसके लिए मेरा जितना भी धन खर्च हो, उसके लिए मैं तैयार हूँ।"

और एक दिन उनके सुनने में आया कि किसी प्रदेश में एक खास प्रकार का रत्न मिलता है, जो रात को दीपक की तरह रोशनी देता है। बस, फिर तो किस बात की देर? लल्लीग ने वह अमूल्य रत्न लाकर आचार्य महाराज की सेवा में रख दिया। उस रत्न से उपाश्रय का कोना-कोना रोशन हो उठा। और उस रोशनी में सुरि जी के शास्त्र रचने का काम तेज़ी

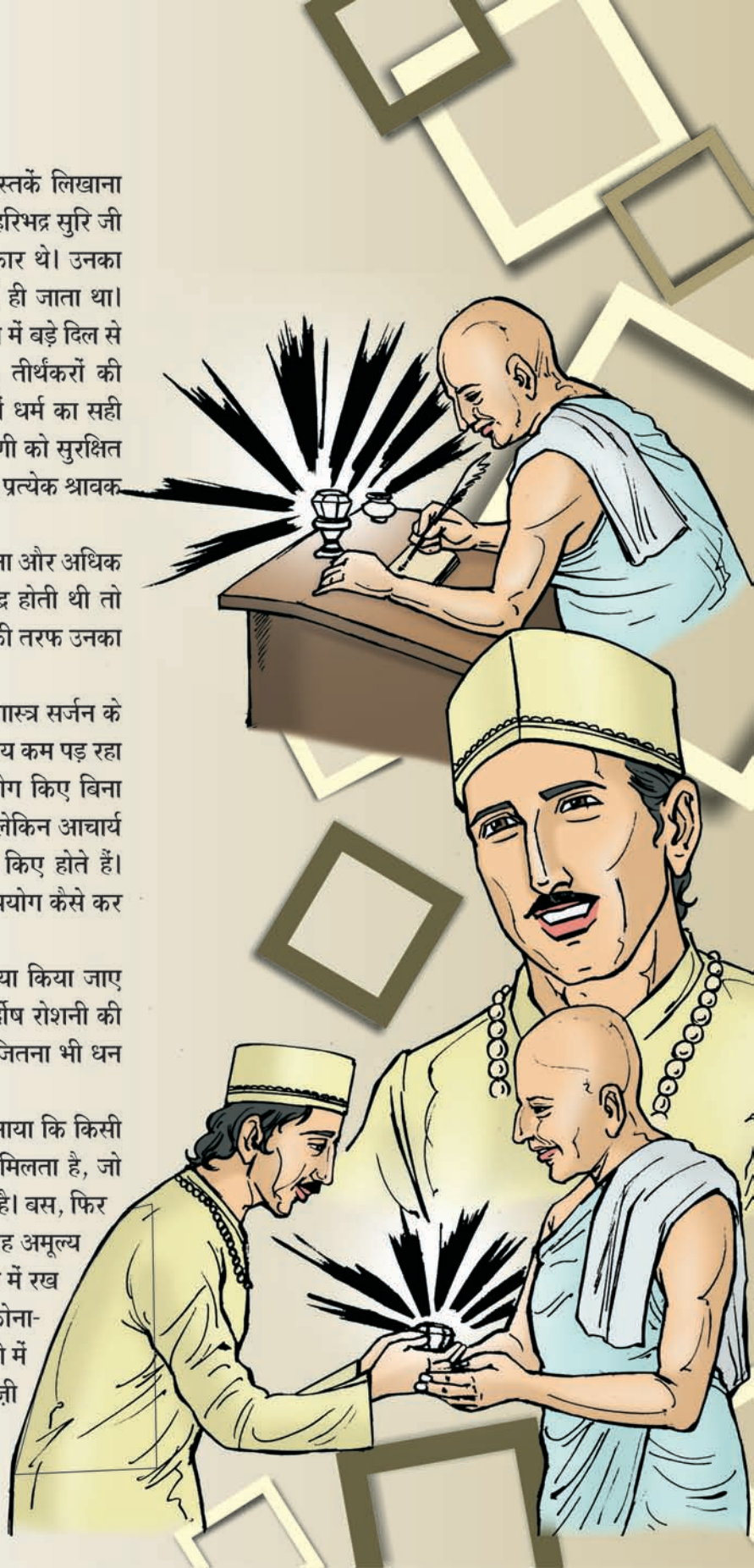

से चलने लगा।

रत्न की तरह लल्लीग की भावना का प्रकाश भी फैलने लगा। लोग भी उनकी भावना की प्रशंसा करने लगे। लल्लीग की भावना बढ़ती ही गई। वे तो इतना ही सोचते कि, "यह संयोग और संपत्ति मिली हैं तो इसका जितना सदुपयोग हो सके उतना करूँ। ऐसा धर्म और ऐसे सद्‌गुरु का संयोग बार-बार नहीं मिलता।"

एक बार लल्लीग ने सुरि जी से आतिथ्य की महिमा सुनी कि, अतिथि तो घर आए हुए देव ही कहलाते हैं। बस, लल्लीग का मन उस तरफ दौड़ने लगा। उन्होंने वहाँ एक रसोईघर की शुरूआत की। जितने ज्यादा अतिथि आते, उतना लल्लीग को ज्यादा आनंद होने लगा।

उन्हें लगा, "भोजन के समय जब हम खाना खाएँ, तब गाँव का कोई भी व्यक्ति बिना भोजन के रहे तो उसका दोष हमें ही लगेगा।" इसलिए उन्होंने भोजन के समय, गाँव और दूसरे गाँव से आनेवाले सभी अतिथि, साधु-संतों के लिए अपने घर के द्वार खोल दिए थे। जो भी आता उसे उनके यहाँ आदरसहित भोजन मिलने लगा।

फिर तो गाँव की सीमा से कोई अतिथि भूखा न जाए, यह लल्लीग का जीवनव्रत बन गया। लल्लीग का घर अतिथि गृह बन गया। उनके घर भोजन के समय सेंकडों लोगों की भीड़ इकट्ठी होती।

भोजन से तृप्त होकर लोग लल्लीग को दुआ देते, तब लल्लीग नम्रतापूर्वक कहते, "यह सब प्रताप गुरु की कृपा का और उनके धर्म बोध का है। गुरु का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है।"

इससे सभी खाना खानेवाले गुरु हरिभद्रजी के पास जाकर "बहुत जीयो भवविरहसूरी" ऐसा जय जयकार गाते और बदले में गुरुजी सभी को आशीर्वाद देते। यह दृश्य देखकर, भाविक लल्लीग को तृप्ति मिलती और अपना जीवन सफल हुआ ऐसा लगता।

सभी लल्लीग की गुरुभक्ति, धर्मप्रेम और आतिथ्य भावना को मन ही मन नमन करते और कहते : गुरुभक्त और अतिथि भावना हो तो श्रावक लल्लीग जैसी।

अपने आपको परखकर देखो

इस अंक को पढ़ने के बाद आप नीचे दी गई प्रत्येक परिस्थिति में निधि को अ, ब या क में से क्या करने की सलाह दोगे?

१ आज रिसेस के बाद लाइब्रेरी का पिरीयड था। लाइब्रेरी के एक कोने में स्तुति एकदम डिप्रेस होकर बैठी थी। कल उसकी गणित की टेस्ट है। और उसे कुछ सवाल नहीं आ रहे थे।

अ. लाइब्रेरी में नई बुक्स का कलेक्शन आया था, इसलिए निधि को अपनी मनपसंद बुक पढ़ने बैठ जाना चाहिए।

ब. स्तुति को उसे सवाल हल करना सिखाना चाहिए।

क. स्तुति को उसे डाँटना चाहिए कि पूरे टर्म मस्ती करती है और फिर टेस्ट के पहले अगले दिन डिप्रेस होकर बैठ जाती है।

२ निधि का लाइब्रेरी के बाद विज्ञान का पिरीयड था। लेकिन ऐसे समाचार आए कि पाठक सर बीमार है और उन्हें होस्पीटल में दाखिल किया है।

अ. निधि को सर की नेगेटिव बातों में ही पिरीयड बीता देना चाहिए।
ब. निधि को प्रार्थना करनी चाहिए कि डॉक्टर उनको पूरे साल बेड रेस्ट करने की सलाह दे और उनके बदले में उन्हें कोई नए टीचर मिल जाएँ।
क. पाठक सर जल्दी ठीक हो जाएँ ऐसी उनके लिए दिल से प्रार्थना करनी चाहिए।

३ आज निधि की रिचा के साथ डिबेट भी थी। निधि का परफोमन्स तो अच्छा था। लेकिन रिचा बहुत नर्वस थी।

अ. रिचा को नर्वस देखकर निधि ने उसे बहुत प्रोत्साहन देना चाहिए ताकि रिचा को हिम्मत आए।
ब. पहली बार निधि का परफोमन्स रिचा से अच्छा होने की वजह से खुश होना चाहिए।
क. निधि को ऐसा भाव रखना चाहिए कि रिचा अब से कभी डिबेट में भाग न ले तो अच्छा।

जवाब : १-ब, २-क, ३-अ

मीठी यादें

साल २००३ की बात है। अडालज में अपरिणित बहनों की ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन हुआ था। एक ब्रह्मचारी बहन को शिविर के लिए बाहरगाँव से अडालज आना था। इससे पहले उन्होंने कभी भी अकेले सफर नहीं किया था इसलिए उन्होंने अपनी मम्मी को साथ में लाने की परमिशन माँगी। लेकिन इस मामले में उन्हें परमिशन नहीं मिली और उन्हें अकेले ही शिविर में आने के लिए कहा गया।

वह अकेली आई तो सही, लेकिन शिविर पूरा होते ही उसे अपने घर जल्दी से पहुँच जाने की हड़बड़ी हुई। शिविर के बाद सभी बहनों ने नीरू माँ के दर्शन करके निकलने का तप किया। तब इस बहन को लगा, "दूसरी सभी बहनों को तो एक दूसरे का साथ है, लेकिन मुझे तो अकेले ही जाना है। अभी ही तो नीरू माँ सत्संग करके गए हैं। तो दोबारा दर्शन करने जाने का क्या अर्थ है?" अकेले जाना था इसलिए उन्हें जल्दी से निकल जाने की इच्छा हो रही थी।

अंत में सभी बहनें नीरू माँ के दर्शन करने गई तब वह बहन भी उनके साथ गई। जब उनके दर्शन की बारी आई, तब नीरू माँ ने उनसे पूछा, "तुम कैसे जाओगी? चिंता नहीं करना, पहुँच जाओगी। हं!" नीरू माँ का यह वाक्य उस बहन को बहुत ही छू गया। उनमें बहुत हिम्मत आ गई। उन्हें लगा, "नीरू माँ को मेरा कितना खयाल है। मुझे दिक्कत नहीं होगी। अब रात के बारह बजे या दो बजे भी मैं अकेली जा सकूँगी।"

इस तरह नीरू माँ सभी का बहुत ध्यान रखते थे। उनके एक ही वाक्य में इतना अधिक बल रहता कि सामनेवाले का सारा भय और असुरक्षा का एहसास छूट जाता था और उसमें हिम्मत आ जाती थी।

पज़ल के जवाब

२.

१. भेड़
२. कुत्ता
३. मगरमच्छ

३.

१.
२.
३.
४.

सीमंधर सिटी GNC Day

Akram Express

April 2014
Year : 2, Issue : 1
Conti. Issue No.:13

BALVIGNAN
Fun 'n' Gyan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.